हिन्दी

(www.tiwariacademy.com)

(वसंत)(पाठ 9)(सं वियोगी हरि – कबीर की साखियाँ)

(कक्षा 8)

प्रश्न अभ्यास

पाठ से

प्रश्न 1:

'तलवार का महत्त्व होता है म्यान का नहीं। उक्त उदाहरण से कबीर क्या कहना चाहते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 1:

'तलवार का महत्त्व होता है म्यान का नहीं। के द्वारा कबीर यह कहना चाहते हैं कि जिस प्रकार तलवार काटने का काम करती है उसकी म्यान नहीं। ठीक उसी प्रकार हमारे अन्दर की आत्मा यदि शुद्ध है तो हम ठीक हैं। यदि केवल शरीर को ही म्यान की तरह सुन्दर बना लें और तलवार बिना धार वाली और आत्मा शुद्ध न हो तो सब कुछ बेकार है।

प्रश्न 2:

पाठ की तीसरी साखी–जिसकी एक पंक्ति है 'मनुवाँ तो दहुँ दिसि फिरै, यह तो सुमिरन नाहिं' के द्वारा कबीर क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर 2:

इस साखी के द्वारा कबीर यह कहना चाहते हैं कि केवल माला फेरने से कुछ नहीं होता मन का भी स्थिर होना जरूरी है। चंचल मन से भक्ति पूर्ण नहीं होती ईश्वर की प्राप्ति भी नहीं होती।

प्रश्न 3:

कबीर घास की निंदा करने से क्यों मना करते हैं। पढ़े हुए दोहे के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 3:

कबीर घास की निंदा करने से इसलिए मना करते हैं क्योंकि जिस प्रकार पैरों में पड़ा तिनका कभी भी उड़कर हमारी ऑखें में गिरकर हमें पीड़ा पहुँचा सकता है। ठीक उसी प्रकार किसी छोटे व्यक्ति की भी निंदा नहीं करनी चाहिए नही ंतो वह कभी भी हमारा अपमान कर सकता है।

प्रश्न 4:

मनुष्य के व्यवहार में ही दूसरों को विरोधी बना लेने वाले दोष होते हैं। यह भावार्थ किस दोहे से व्यक्त होता है?

उत्तर 4:

जग में बैरी कोई नहीं, जो मन सीतल होय।
या आपा को डारि दे, दया करै सब कोय।।

पाठ से आगे

प्रश्न 1:

''या आपा को डारि दे, दया करै सब कोय।''

''ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय।''

इन दोनों पंक्तियों में 'आपा' को छोड़ देने या खो देने की बात की गई है। 'आपा' किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है? क्या 'आपा' स्वार्थ के निकट का अर्थ देता है या घमंड का?

उत्तर 1:

आपा हर रूप में घमंड का ही अर्थ देता उसके मिट जाने से आदमी दयावान बन जाता है और मीठी बोली बोलने लगता है।

प्रश्न 2:

आपके विचार में आपा और आत्मविश्वास में तथा आपा और उत्साह में क्या कोई अंतर हो सकता है? स्पष्ट करें।

उत्तर 2:

आपा और आत्मविश्वास दोनों एक हैं दोनों ही घमंड के प्रतीक हैं जबकि आपा और उत्साह कार्य के कार्य के प्रति उत्साह को दिखाता है।

प्रश्न 3:

सभी मनुष्य एक ही प्रकार से देखते–सुनते हैं पर एक समान विचार नहीं रखते। सभी अपनी–अपनी मनोवृत्तियों के अनुसार कार्य करते हैं। पाठ में आई कबीर की किस साखी से उपर्युक्त पंक्तियों के भाव मिलते हैं, एक समान होने के लिए आवश्यक क्या है? लिखिए।

उत्तर 3:

आवत गारी एक है, उलटत होइ अनेक।

कह कबीर नहिं उलटिए, वही एक की एक।।

एक समान होने के लिए सबके विचार और भाव मिलने चाहिए।

प्रश्न 4:

कबीर के दोहों को साखी क्यों कहा जाता है? ज्ञात कीजिए।

उत्तर 4:

कबीर के दोहे समाज के व्यवहार के साक्ष्य रूप में हैं यह साक्ष्य ही आगे चलकर साखी के रूप में परिवर्तित हो गया इसलिए उन्हें साखी कहा जाता है।